तीनों दिव्य तत्त्वों का स्वरूप सूर्य के दृष्टान्त से समझा जा सकता है। सूर्य के भी तीन पक्ष हैं—सूर्यज्योति, सूर्य का बाह्य रूप और स्वयं सूर्यलोक। सूर्यज्योति का ज्ञाता प्रारम्भिक विद्यार्थी है। वह ब्रह्माण्ड में व्याप्त सूर्यज्योति के अल्प ज्ञान से सन्तुष्ट हो जाता है। ऐसे साधारण विद्यार्थी को परतत्त्व के केवल बाह्य स्वरूप अर्थात् निर्विशेष दीप्ति की अनुभूति होती है। उन्नति करके सौर-मण्डल के ज्ञान को प्राप्त कर लेना परतत्त्व के परमात्मा स्वरूप के ज्ञान को प्राप्त करना है। अन्त में सूर्यलोक के मध्य में प्रवेश कर जाना परतत्त्व के भगवत्-स्वरूप की प्राप्ति के समान है। इससे सिद्ध होता है कि यद्यपि परतत्त्व के सब जिज्ञासुओं का लक्ष्य एक ही तत्त्व है, किन्तु भगवत्प्राप्त कृष्णभक्त ही सर्वोच्च ज्ञानी है। सूर्यज्योति, सूर्यमण्डल तथा अन्तरंग सूर्यलोक को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। पर साथ ही, इन तीनों पक्षों के विद्यार्थी एक श्रेणी में नहीं आते।

संस्कृत शब्द **भगवान्** की विवेचना व्यासदेव के पिता महर्षि पराशर ने की है। समग्र श्री, वीर्य, यश, रूप, ज्ञान तथा त्याग से युक्त परम पुरुष को **भगवान्** कहते हैं। ऐसे अनेक व्यक्ति हैं जो अत्यन्त धनी, वीर्यवान्, सुन्दर, यशस्वी, विद्वान् और त्यागी हैं। किन्तु यह कोई नहीं कह सकता कि वह समग्र श्री, वीर्य, आदि से युक्त है। एकमात्र श्रीकृष्ण ही यह उद्घोष कर सकते हैं; अतएव वे साक्षात् स्वयं भगवान् हैं। ब्रह्म, शिव तथा नारायण सहित कोई जीव श्रीकृष्ण के समान पूर्ण षडैश्वर्यवान् नहीं है। इस कारण 'ब्रह्मसंहिता' में ब्रह्माजी का निर्णय है कि श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् हैं। उनसे अधिक अथवा उनके समान कोई नहीं है, वे आदिपुरुष गोविन्द सब कारणों के परम कारण हैं।

ईश्वरः परमः कृष्णः सच्चिदानन्दविग्रहः।
अनादिरादिर्गोविन्दः सर्वकारणकारणम्॥

'बहुत से पुरुष दिव्य गुणों से युक्त हैं, किन्तु अनुपमेय होने के कारण भगवान् श्रीकृष्ण परमोत्तम हैं। वे परम-पुरुष हैं; उनका श्रीविग्रह सच्चिदानन्दमय है। वे आदिपुरुष गोविन्द ही सब कारणों के परम कारण हैं।' (ब्रह्मसंहिता)

श्रीमद्भागवत में नाना भगवत् अवतारों का उल्लेख है, परन्तु श्रीकृष्ण को सकल अवतारों का उद्गम, 'स्वयं भगवान्' कहा गया है:

एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्।
इन्द्रारिव्याकुलं लोकं मृडयन्ति युगे युगे॥

'यहाँ वर्णित सब अवतार श्रीभगवान् के अंश अथवा कलास्वरूप हैं; परन्तु श्रीकृष्ण तो स्वयं भगवान् हैं।' (श्रीमद्भागवत १.३.२८)

अस्तु, श्रीकृष्ण परमात्मा एवं निर्विशेष ब्रह्म के भी उद्गम परात्पर आदिपुरुष भगवान् हैं।

स्वयं भगवान् की उपस्थिति में अर्जुन द्वारा स्वजनों के लिए शोक करना सर्वथा